चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... The Tribune .....

दिनांक 20:4:2019 पृष्ठ सं. .....3..... कॉलम .....2-4.....

HAU gets ₹4.62 crore for research projects

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, APRIL 19

The Union Human Resource Development Ministry had sanctioned six research projects worth Rs 4.62 crore to Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) to work with foreign institutes.

Prof KP Singh, Vice Chancellor, HAU, said the projects had been sanctioned under the 'SPARC' (Scheme for Promotion of Academic and Research Collaboration) scheme. "The SPARC scheme launched in October last year aims to improve the research ecosystem of higher education institutes of the country. It also includes the facilitation of academic and research cooperation, in which top ranked Indian institutions and globally ranked foreign institutions will work together on joint research projects. Under the scheme, research projects were invited from the researchers who have collaboration with world famous foreign universities," he said.

Collaboration with foreign varsities

On these projects, the HAU faculty would work in collaboration with scientists the University of Massachusetts; Washington State University, USA; Laval University, Canada; University of British Columbia, Canada; Massey University, New Zealand; Institute of Agricultural Sciences, Switzerland; and University of Sydney, Australia

On these projects, the HAU faculty would work in collaboration with scientists the University of Massachusetts; Washington State University, USA; Laval University, Canada; University of British Columbia, Canada; Massey University, New Zealand; Institute of Agricultural Sciences, Switzerland; and University of Sydney, Australia, he said.

The Vice Chancellor said according to a communiqué received from Dr A Goswami, national convener of SPARC, the project granted to the university by the Human Resource Development Ministry included development of low silicon rice for the management of paddy straw (Rs 96.55 lakh), stress tolerance and yield in soybean (Rs 78.32 lakh), techno-economically viable technologies for crop residue management (Rs 74.73 lakh) and standardization of seed testing procedures and storability for medicinal plants (Rs 62.88 lakh). It also includes promoting smart farming through agro-meteorological techniques (Rs 75 lakh) and research on wheat to achieve food security (Rs 75 lakh).

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 26:4:2019 पृष्ठ सं. 13 कॉलम 2-6

अमेरिका, न्यूजीलैंड सहित छह देशों के साथ काम करेगी एचएयू, 4.62 करोड़ की छह परियोजनाएं मिलीं

कुलपति बोले- सभी परियोजनाओं की अवधि दो वर्ष; पीएचडी कर रहे विद्यार्थियों को मिलेंगे आगे बढ़ने के अवसर

जागरण संवाददाता हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को साढ़े चार करोड़ रुपये से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं मिली हैं। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मिली इन परियोजनओं के तहत विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक अन्य देशों के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि मंत्रालय की शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने की योजना स्कीम फॉर प्रमोशन ऑफ एकेडमिक व रिसर्च कोलाबरेशन' स्पार्क के तहत हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की छह अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकार किया है। इन परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए 4.62 करोड़ की रुपये की राशि मंत्रालय की तरफ से प्रदान की गई है। कुलपति ने बताया कि सभी छह परियोजनाएं दो वर्ष अवधि की हैं।

इन परियोजनाओं के तहत विश्वविद्यालय में पीएचडी कर रहे 12 विद्यार्थियों को विदेशी सहयोगी विश्वविद्यालयों में शोध करने का अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इन सहयोगी विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक यहां आएंगे और यहां की फैकल्टी और विद्यार्थियों का व्याख्यानों व प्रशिक्षणों द्वारा नवीन तकनीकों के बारे मार्गदर्शन करेंगे।

स्पार्क योजना के तहत भारतीय और विदेशी संस्थान मिलकर करते हैं अनुसंधान

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर माह में 'स्पार्क' योजना शुरू की थी। इसके तहत शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे। इस योजना के तहत पूरे देश से उन शोधकर्ताओं जिनका विश्व प्रसिद्ध विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग है, से अनुसंधान परियोजनाओं को आमंत्रित किया गया था।

जानिए कौन सी परियोजना के तहत किस देश के साथ होगा शोध

1. यूएसए के साथ कम सिलिकॉन वाले चावल के विकास पर शोध

धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास परियोजना पर अमेरिका के साथ मिलकर काम किया जाएगा। 96.55 लाख रुपये की इस परियोजना में एचएयू से प्रो. पुष्पा खरब व डा. उपेंद्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डा. ओमप्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डा. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे।

2. सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस के लिए कनाडा के साथ मिलकर शोध

सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन परियोजना के तहत 78.32 लाख रुपये खर्च होंगे। परियोजना पर एचएयू के डा. विनोद गोयल व राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान मोहाली की डा. हमिरा सोनाथ कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रेंकोइस बेलजिले व प्रो. रिचर्ड बेलांगर मिलकर कार्य करेंगे।

3. फसल अवशेष प्रबंधन में कोलंबिया के साथ

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी परियोजना पर 74.73 लाख रूपए खर्च होंगे। एचएयू के डा. योगेन्द्र कुमार यादव व डा. यादविका यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के डा. एंथनी लाउ व डा. शहाब सोखनगंज के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

4. औषधीय पौधों के लिए न्यूजीलैंड के साथ

औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण परियोजना पर 62.88 लाख रूपए खर्च होंगे। इसके तहत एचएयू के डा. अक्षय कुमार भुकर व डा. विरेन्द्र सिंह मोर न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के क्रेग राबर्ट व सोफकोवा के साथ मिलकर शोध करेंगे।

5. कृषि मौसम संबंधी तकनीकों में स्विट्जरलैंड के साथ

कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देने के लिए 75 लाख रुपये की परियोजना मिली है। इसके तहत एचएयू के डा. सुरेन्द्र सिंह धनखड़ व डा. राज सिंह, स्विट्जरलैंड के इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस के डा. युगैस्टर वर्नर व डा. माना घारूण के साथ मिलकर शोध करेंगे।

6. खाद्य सुरक्षा में सिडनी के साथ

खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान के लिए 75 लाख रूपए की परियोजना एचएयू को मिली है। इस परियोजना के तहत एचएयू की डा. रेणु मुजाल व डा. विनोद गोयल के अलावा यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी की डा. उर्मिल बंसल व डा. हरबंस बरीयाना शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर
दिनांक 26.4.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-7

एचएयू को मिले 4.62 करोड़ रुपये के 6 प्रोजेक्ट, यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड स्विट्जरलैंड और सिडनी के साथ विवि करेगा रिसर्च वर्क, वहां के वैज्ञानिक भी आएंगे

सभी परियोजनाएं 2 वर्ष के लिए, 12 स्टूडेंट्स सहयोगी विश्वविद्यालयों में कर सकेंगे शोध

भास्कर न्यूज | हिसार

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय की तरफ से चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को 4.62 करोड़ रुपये के 6 रिसर्च प्रोजेक्ट मिले हैं। इस धनराशि से एचएयू प्रशासन यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड और सिडनी के साथ काम करेगा। सभी परियोजनाएं 2 वर्ष अवधि की हैं और इन परियोजनाओं के तहत इस विश्वविद्यालय में पीएचडी कर रहे 12 विद्यार्थियों को विदेशी सहयोगी विश्वविद्यालयों में शोध करने का अवसर मिलेगा। खास बात है कि इन देशों के वैज्ञानिक भारत में आकर काम भी करेंगे।

रिसर्च के स्तर को बढ़ाने के लिए विदेशी संस्थानों का साथ : कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अक्टूबर माह में स्पार्क योजना की शुरुआत की थी। इसमें एजुकेशनल और रिसर्च सहयोग की सुविधा द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में रिसर्च के लिए गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है। इसमें शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। इस योजना के तहत पूरे देश से उन शोधकर्ताओं जिनका विश्व प्रसिद्ध विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग है, से अनुसंधान परियोजनाओं को आमंत्रित किया गया था।

इन प्रोजेक्टों पर एचएयू करेगा काम

स्पार्क के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ए. गोस्वामी से प्राप्त सूचना के अनुसार एचएयू की ओर से जमा की गई जिन शोध परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है।

- धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास (96.55 लाख रूपए)
- सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन (78.32 लाख रूपए)
- फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी (74.73 लाख रूपए)
- औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण (62.88 लाख रूपए)
- अतिरिक्त कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना (75 लाख रूपए)
- खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान (75 लाख रूपए) शामिल हैं।

एचएयू प्रशासन के मुताबिक प्रोजेक्ट के तहत इन साइंटिस्ट्स की टीमें करेंगी रिसर्च

1. कम सिलिकॉन युक्त चावल में यूएसए के साथ : इस परियोजना में धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल के विकास पर एचएयू से प्रो. पुष्पा खरब व डॉ. उपेन्द्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डॉ. ओम प्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे।

2. सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन के लिए कनाडा के साथ : सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन परियोजना पर एचएयू के डॉ. विनोद गोयल व राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली की डॉ. हमिरा सोनाथ कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रेंकोइस बेलज़िले व प्रो. रिचर्ड बेलांगर मिलकर कार्य करेंगे।

फसल अवशेष प्रबंधन में कोलंबिया के साथ इसी प्रकार फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी परियोजना पर एचएयू के डॉ. योगेन्द्र कुमार यादव व डॉ. यादविका यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के डॉ. एंथनी लाउ व डॉ. शहाब सोखनगंज के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

3. औषधीय पौधों के लिए न्यूजीलैंड के साथ : औषधीय पौधों के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण परियोजना पर एचएयू के डॉ. अक्सय कुमार भुकर व डॉ. विरेन्द्र सिंह मोर न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के क्रेग राबर्ट व सोफकोवा के साथ मिलकर शोध करेंगे।

4. कृषि मौसम संबंधी तकनीकों में स्विट्जरलैंड के साथ : कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना परियोजना पर एचएयू के डॉ. सुरेन्द्र सिंह धनखड़ व डॉ. राज सिंह स्विट्जरलैंड के इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस के डॉ. युगैस्टर वर्नर व डॉ. माना घारूणा के साथ मिलकर शोध करेंगे।

5. खाद्य सुरक्षा में सिडनी के साथ : खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान परियोजना पर एचएयू की डॉ. रेणू मुंजाल व डॉ. विनोद गोयल यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी की डॉ. उर्मिल बंसल व डॉ. हरबंस बरीयाना के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....
दिनांक 20:4:2019 पृष्ठ सं. ....6..... कॉलम ....1-4.....

एचएयू को दो वर्ष के लिए मिली 4.62 करोड़ की छह अनुसंधान परियोजनाएं

यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड, सिडनी के साथ करेंगे काम

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को साढ़े चार करोड़ रुपये से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की हैं।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि मंत्रालय की शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने की योजना स्कीम फॉर प्रमोशन ऑफ एकेडमिक व रिसर्च कॉलेबोरेशन (स्पार्क) के तहत हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की छह अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकार करते हुए इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन के लिए 4.62 करोड़ की की राशि प्रदान की है।

अक्तूबर 2018 में शुरू की थी स्पार्क योजना

उन्होंने बताया कि केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग की सुविधा द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर में स्पार्क योजना शुरू की थी, जिसमें शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे।

स्पार्क योजना के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ए. गोस्वामी के अनुसार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की ओर से जमा की गई छह शोध परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है।

चावल में यूएसए के साथ मिलकर होगा शोध

कम सिलिकॉन युक्त चावल में यूएसए के साथ इस परियोजना में धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल के विकास पर हकृवि से प्रो. पुष्पा खर्ब व डॉ. उपेंद्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डॉ. ओमप्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे।

सोयाबीन में कनाडा के साथ शोध : सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन के लिए कनाडा के साथ इस परियोजना पर हकृवि के डॉ. विनोद गोयल व राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान मोहाली की डॉ. हमिरा सोनाथ, कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रेंकोइस बेलजिले व प्रो. रिचर्ड बेलांगर मिलकर कार्य करेंगे।

फसल अवशेष प्रबंधन में कोलंबिया के साथ : फसल अवशेष प्रबंधन में कोलंबिया के साथ आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी परियोजना पर हकृवि के डॉ. योगेंद्र कुमार यादव व डॉ. यादविका यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के डॉ. एंथनी लाउ व डॉ. शहाब सोखनगंज के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

न्यूजीलैंड के साथ औषधीय पौधों पर : औषधीय पौधों के लिए न्यूजीलैंड के साथ औषधीय पौधों के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण परियोजना पर हकृवि के डॉ. अक्षय कुमार भुकर व डॉ. विरेंद्र सिंह मोर न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के क्रेग राबर्ट व सोफकोवा के साथ मिलकर शोध करेंगे।

स्विटजरलैंड के साथ कृषि मौसम तकनीकों पर : कृषि मौसम संबंधी तकनीकों में स्विट्जरलैंड के साथ परियोजना के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना परियोजना पर हकृवि के डॉ. सुरेंद्र सिंह धनखड़ व डॉ. राज सिंह स्विट्जरलैंड के इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस के डॉ. युगैस्टर वर्नर व डॉ. माना धारूण के साथ मिलकर शोध करेंगे।

इनको मिली स्वीकृति

- धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास - 96.55 लाख रुपये
- सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन 78.32 लाख रुपये
- फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी - 74.73 लाख रुपये
- औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण - 62.88 लाख रुपये
- कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना 75 लाख रुपये
- खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान - 75 लाख रुपये

सिडनी के साथ खाद्य सुरक्षा

खाद्य सुरक्षा में सिडनी के साथ खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं अनुसंधान परियोजना पर हकृवि की डॉ. रेणु मुंजाल व डॉ. विनोद गोयल तथा यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी की डॉ. उर्मिल बंसल व डॉ. हरबंस बरीयाना मिलकर अनुसंधान करेंगे।

दो वर्ष की अवधि की हैं सभी परियोजनाएं : कुलपति ने बताया कि उपरोक्त सभी परियोजनाएं दो वर्ष अवधि की हैं और इन परियोजनाओं के अंतर्गत इस विश्वविद्यालय में पीएचडी कर रहे 12 विद्यार्थियों को विदेशी सहयोगी विश्वविद्यालयों में शोध करने का अवसर मिलेगा। इन सहयोगी विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक यहां आएंगे और यहां की फैकल्टी और विद्यार्थियों का व्याख्यानों व प्रशिक्षणों के द्वारा नवीन तकनीकों के बारे में मार्गदर्शन करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम पंजाब केसरी

दिनांक 20.4.2019 पृष्ठ सं. 4 कॉलम 1-3

एच.ए.यू. को मिली 4.62 करोड़ की ग्रांट, देश एवं विदेश के संस्थान मिलकर करेंगे शोध

हिसार, 19 अप्रैल (ब्यूरो): केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को साढ़े 4 करोड़ रुपए से अधिक राशि की 6 अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की हैं।

कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि उपरोक्त मंत्रालय की शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने की योजना स्कीम फॉर परमोशन ऑफ एकैडमिक व रिसर्च कॉलेबोरेशन 'स्पार्क' के तहत हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की 6 अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकार करते हुए इन परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए 4.62 करोड़ की रुपए की राशि प्रदान की है। उन्होंने बताया कि 'स्पार्क' योजना में शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य कर करेंगे।

ये प्रदान की हैं 6 परियोजनाएं

कुलपति प्रो. के.पी सिंह ने बताया कि जिन शोध परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है उनमें धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास (96.55 लाख रुपए), सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरैंस एवं उत्पादन (78.32 लाख रूपए), फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी (74.73 लाख रूपए) तथा औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण (62.88 लाख रूपए) के अतिरिक्त कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना (75 लाख रूपए) और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान (75 लाख रुपए) शामिल हैं।

यह वैज्ञानिक करेंगे अनुसंधान

इस परियोजना में धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल के विकास पर हकृवि से प्रो. पुष्पा खरब व डा. उपेन्द्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डा. ओम प्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डा. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे। वहीं सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन परियोजना पर हकृवि के डा. विनोद गोयल व राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली की डा. हमिरा सोनाथ कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रेंकोइस बेलजिले व प्रो. रिचर्ड बेलांगर मिलकर कार्य करेंगे।

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....हरि भूमि....

दिनांक 20.6.2019 पृष्ठ सं. 14 कॉलम 2-8

हकृवि को साढ़े चार करोड़ रुपये से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं मिली

यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, सिडनी और स्विट्जरलैंड के साथ रिसर्च करेगा हकृवि

- पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर माह में शुरू की थी 'स्पार्क' योजना
- भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर करेंगे परियोजनाओं पर कार्य

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने हकृवि को साढ़े चार करोड़ रुपये से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की हैं। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने बताया कि स्कीम फॉर प्रमोशन ऑफ अकेडमिक व रिसर्च कोलेबोरेशन 'स्पार्क' के तहत हकृवि को छह परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए 4.62 करोड़ की रुपये की राशि प्रदान की है।

उन्होंने बताया कि केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग की सुविधा द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर माह में 'स्पार्क' योजना शुरू की थी। जिसमें शीर्ष स्थान पर बने हुए

भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे।

इस परियोजना में यूएसए के साथ परियोजना में धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल के विकास पर हकृवि से प्रो. पुष्पा खरब व डॉ. उपेंद्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डॉ. ओम प्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे।

सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन

सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन परियोजना पर हकृवि के डॉ. विनोद गोयल व राष्ट्रीय कृषि-खाद्य जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली की डॉ. हमिरा सोनाह कनाडा की लावल यूनिवर्सिटी के प्रो. फ्रैंकोइस बेलजाइल व प्रो. रिचर्ड बेलांगर मिलकर कार्य करेंगे।

फसल अवशेष प्रबंधन में कोलंबिया के साथ

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी परियोजना पर हकृवि के डॉ. योगेन्द्र कुमार यादव व डॉ. यादविका यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया के डॉ. एंथनी लाउ व डॉ. शहाब सोखनसंज के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

औषधीय पौधों के लिए न्यूजीलैंड के साथ

औषधीय पौधों के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण परियोजना पर हकृवि के डॉ. अक्सए कुमार भुकर व डॉ. विरेन्द्र सिंह मोर न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के क्रेग राबर्ट व सोमसकोवा के साथ मिलकर शोध करेंगे।

कृषि मौसम तकनीकों में स्विट्जरलैंड के साथ

कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना परियोजना पर हकृवि के डॉ. सुरेन्द्र सिंह धनखड़ व डॉ. राजसिंह स्विट्जरलैंड के इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंस के डॉ. बुचिस्टर वर्नर व डॉ. माना धाक्षण के साथ मिलकर शोध करेंगे।

ये मिली परियोजनाएं

धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल हब विकास के लिए 96.55 लाख की परियोजना मिली है। सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन 79.32 लाख, फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी 74.73 लाख रुपये तथा औषधीय पौधों मोरिंगा और सौंफ के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण 62.88 लाख रुपये, कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना 75 लाख रुपये और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान 75 लाख रुपये शामिल हैं।

अवसर मिलेगा

हकृवि के तहत पहली बार 4.62 करोड़ की छह परियोजनाएं मिली हैं। इन्हें परियोजनाएं 2 वर्ष अवधि की हैं। 12 विदेशी विश्वविद्यालयों के भी विदेशों में शोध का अवसर मिलेगा।

प्रो. केपी सिंह, कुलपति, हकृवि

खाद्य सुरक्षा में सिडनी के साथ

खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेहूं पर अनुसंधान परियोजना पर हकृवि की डॉ. रेणु मुंजाल व डॉ. विनोद गोयल यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी की डॉ. डेनियल चेनाल व डॉ. हरबंस बरीयाना के साथ मिलकर अनुसंधान करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....नभ: छोर....
दिनांक 19.4.2019 पृष्ठ सं. ...6... कॉलम ...6-8...

हकृवि को मिली छह अनुसंधान परियोजनाएं

हिसार/19 अप्रैल/रिपोर्टर
केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को साढे चार करोड़ रूपए से अधिक राशि की छह अनुसंधान परियोजनाएं प्रदान की हैं। कुलपति प्रो. केपी सिंह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि उपरोक्त मंत्रालय की शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने की योजना स्कीम फॉर परमोशन ऑफ एकेडमिक व रिसर्च कॉलेबोरेशन 'स्पार्क' के तहत हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की छह अनुसंधान परियोजनाएं स्वीकार करते हुए इन परियोजनाओं के कार्यान्वन के लिए 4.62 करोड़ की रूपए की राशि प्रदान की है। उन्होंने बताया कि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग की सुविधा द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर माह में 'स्पार्क' योजना शुरू की थी जिसमें शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे। उपरोक्त योजना के तहत पूरे देश से उन शोधकर्ताओं जिनका विश्व प्रसिद्ध विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग है, से अनुसंधान परियोजनाओं को आमंत्रित किया गया था। कुलपति ने बताया कि जिन शोध परियोजनाओं को स्वीकृती दी गई है उनमें धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास (96.55 लाख रूपए), सोयाबीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन (78.32 लाख रूपए), फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी (74.73 लाख रूपए) तथा औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण (62.88 लाख रूपए) के अतिरिक्त कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना (75 लाख रूपए) और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेंहू पर अनुसंधान (75 लाख रूपए) शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... दैनिक हिसार .....

दिनांक 19-4-2019 पृष्ठ सं. .....4..... कॉलम .....5-8.....

हकृवि को यूएसए, कनाडा, कोलंबिया, न्यूजीलैंड, स्विट्जरलैंड और सिडनी के साथ काम करने के लिए मिली 4.62 करोड़ रूपए की अनुसंधान परियोजनाएँ

हिसार : 19 अप्रैल केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को साढे चार करोड़ रूपए से अधिक राशि की छः अनुसंधान परियोजनाएँ प्रदान की हैं। कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि उपरोक्त मंत्रालय की शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देने की योजना स्कीम फॉर परमोशन ऑफ एकेडमिक व रिसर्च कॉलेबोरेशन 'स्पार्क' के तहत हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की छः अनुसंधान परियोजनाएँ स्वीकार करते हुए इन परियोजनाओं के कार्यान्वन के लिए 4.62 करोड़ की रूपए की राशि प्रदान की है।

उन्होंने बताया कि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग की सुविधा द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के उद्देश्य से गत वर्ष अक्तूबर माह में 'स्पार्क' योजना शुरू की थी जिसमें शीर्ष स्थान पर बने हुए भारतीय संस्थान और विदेशी संस्थान आपस में मिलकर संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य करेंगे। उपरोक्त योजना के तहत पूरे देश से उन शोधकर्ताओं जिनका विश्व प्रसिद्ध विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग है, से अनुसंधान परियोजनाओं को आमंत्रित किया गया था। कुलपति ने बताया कि इस विश्वविद्यालय द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय को छः परियोजनाएँ प्रदान की गई हैं। उन्होंने बताया 'स्पार्क' के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. ए. गोस्वामी से प्राप्त सूचना के अनुसार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से जमा की गई जिन शोध परियोजनाओं को स्वीकृती दी गई है उनमें धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल का विकास (96.55 लाख रूपए), सोयावीन में स्ट्रेस-टॉलरेंस एवं उत्पादन (78.32 लाख रूपए), फसल अवशेष प्रबंधन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकी (74.73 लाख रूपए) तथा औषधीय पौधों (मोरिंगा और गोखरू) के लिए बीज परीक्षण प्रक्रियाओं व भंडारण क्षमता का मानकीकरण (62.88 लाख रूपए) के अतिरिक्त कृषि मौसम संबंधी तकनीकों के माध्यम से जलवायु स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना (75 लाख रूपए) और खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए गेंहू पर अनुसंधान (75 लाख रूपए) शामिल हैं। यह वैज्ञानिक करेंगे अनुसंधान कम सिलिकॉन युक्त चावल में यूएसए के साथ इस परियोजना में धान की पराली प्रबंधन के लिए कम सिलिकॉन युक्त चावल के विकास पर हकृवि से प्रो. पुष्पा खरब व डॉ. उपेन्द्र कुमार यूनिवर्सिटी ऑफ मैसाचुसेट्स से डॉ. ओम प्रकाश धनखड़ व वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. कुलविंदर सिंह गिल के साथ मिलकर शोध कार्य करेंगे।